अक्तूबर 2021

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

मान की ग्रंथि की शुरूआत कहाँ से होती है? मान में स्वाद, मिठास आने के बाद मान के प्रति राग, मान का लोभ, मान की भूख, मान की भीख शुरू हो जाती है और अंत में मान में विकृति हो जाती है। यानी कि मान के लिए कपट करवाता है।

अडालज : जन्माष्टमी का उत्सव : ता. 30 अगस्ट 2021

हिंडोला दर्शन

त्रिमंदिर में दर्शन

प्रसाद अर्पण

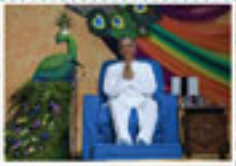

रास-गरबा

भक्ति

ध्वजा को झुलाते हुए पूज्यश्री

अडालज : पर्युषण पारायण और स्वामी प्राण प्रतिष्ठा : ता. 4 से 12 सितम्बर 2021

प्रतिक्रमण

गुजरात के नये मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल ने त्रिमंदिर में दर्शन किए और पूज्यश्री से आशीर्वाद लिया।

वर्ष : 16 अंक : 12
अखंड क्रमांक : 192
अक्तूबर 2021
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2021
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 650 रुपये
यू.एस.ए. : 60 डॉलर
यू.के. : 45 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 10 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

'मान' नहीं होता तो यहीं 'मोक्ष' होता

संपादकीय

अनंत जन्मों से मोक्ष जाने के प्रयत्नों में, जीवन में कितनी ही बार चढ़ता है और कितनी ही बार गिरता है लेकिन इच्छित परिणाम प्राप्त नहीं कर पाता, उसमें कौन से परिबल काम करते हैं? मोक्षमार्ग में आगे बढ़ने में कुछ ऐसे कारण बाधक होते हैं, जो साधक को भुलावे में डाल देते हैं। जितना महत्व चढ़ने के रास्ते का है उससे भी कई गुना महत्व उन बाधक कारणों को जानने का है जो उस रास्ते पर फिसला सकते हैं। ज्ञानी कृपा से अक्रम विज्ञान द्वारा हम सभी को मोक्षमार्ग में आगे बढ़ने का रास्ता तो मिल गया है लेकिन यहाँ हम मोक्षमार्ग में बाधक, ऐसे एक कारण 'मान' कषाय पर दादाश्री की वाणी का संक्षेप में अभ्यास करेंगे।

मान के स्वरूप को समझाते हुए दादाश्री बताते हैं, अहंकार का विस्तृत स्वरूप 'मान' है। मानी के लक्षण जैसे कि मान कहाँ से मिलेगा, अपमान कैसे टलेगा, लगातार अपमान का भय लगता रहता है और यदि कोई अपमान करे तो उस पर क्रोध आ जाता है। मान की ग्रंथि की शुरूआत कहाँ से होती है? मान में स्वाद, मिठास आने के बाद मान के प्रति राग, मान का लोभ, मान की भूख, मान की भीख शुरू हो जाती है और अंत में मान में विकृति हो जाती है। यानी कि मान के लिए कपट करवाता है। मान का *निकाल* तो हो सकता है लेकिन मान की भूख और भीख का *निकाल* मुश्किल है, जो जागृति को मंद करती है। यह मान ऐसा गाढ़ दोष है कि कोई मान दे तो मान देने वाले पर दृष्टि मिठास वाली हो जाती है, जो आगे चलकर विषय के गड्ढे में भी गिरा सकती है। इसलिए मान के सामने सतर्क रहना बहुत ज़रूरी है! कृपालुदेव ने भी कहा है न कि 'जगत् में मान नहीं होता तो यहीं मोक्ष होता!' मान ही इस संसार का मुख्य कारण है।

यह मान किस कारण से टिका हुआ है? सामने वाले को हल्का मानने से, सामने वाले का तिरस्कार करने से। 'मैं कुछ हूँ', यही भाव सामने वाले को दुःख देता है। मान की ग्रंथि को तोड़ने के अचूक उपायों का वर्णन करते हुए दादाश्री बताते हैं कि मान अच्छा लगे, उसमें हर्ज नहीं है लेकिन साथ में यह जागृति रहनी चाहिए कि मान गलत है, मान की इच्छा नहीं होनी चाहिए। जब अपमान करने वाले को उपकारी माना जाएगा तब मान की ग्रंथि का छेदन होगा। फिर आज्ञा के उपाय जैसे कि मान-अपमान का स्पर्श *पुद्गल* को होता है, हमें, शुद्धात्मा को नहीं होता, ऐसी जागृति। साथ ही मान की गांठ को विलय करने की विशेष चाबी है - 'जिसे कुछ भी नहीं चाहिए, उसका सब काम हो जाता है।'

दादाश्री बताते हैं कि मान और मोक्ष का आपस में बैर है। ज़रा से मान के लिए मनुष्य इस अत्यधिक मूल्यवान ज्ञान को भी खो देता है! अक्रम मार्ग अर्थात् प्योरिटी का मार्ग! मोक्ष के ध्येय में बाधक 'मान' कषाय के स्वरूप को पहचानकर 'मान' के सामने प्योरिटी का पुरुषार्थ करने के लिए, प्रस्तुत अंक में महात्माओं को प्रैक्टिकली आवश्यक चाबियाँ मिल जाएँ, यही हृदय से अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

'मान' नहीं होता तो यहीं 'मोक्ष' होता

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

अहंकार अर्थात् निर्बलता

प्रश्नकर्ता : जगत् के सभी लोग अहंकार के जाल में फँसे हुए हैं।

दादाश्री : हाँ! फँसे हुए हैं, बस! अहंकार अर्थात् क्या? निर्बलता।

अहंकार की वजह से ही सारी शक्तियाँ व्यर्थ खर्च हो गई हैं न! वह हमेशा अंधा ही होता है। जितना अहंकार, उतना ही अंधापन है। जैसे-जैसे मैंने अपने अहंकार को जाते हुए देखा वैसे-वैसे मेरी आँखें खुलती गईं। अंधेपन के कारण खुद को अपने खुद के दोष दिखाई नहीं देते। जब वह अहंकार कम हो जाता है, तब खुद के दोष दिखाई देते हैं।

इस अहंकार के चार भाग हैं, क्रोध-मान-माया और लोभ। जब लोभ में पड़े, पैसों में पड़े तो लोभांध हो जाता है, मान में पड़े तो मानांध हो जाता है, क्रोध में पड़े तब क्रोधांध हो जाता है। सभी में अंधापन होता है। चाहे किसी में भी हो लेकिन अहंकार ही अंधापन है। अहंकार, वह भ्रांति से उत्पन्न हुई चीज़ है।

अहंकार-मान-अभिमान के लक्षण

प्रश्नकर्ता : अहंकार, मान और अभिमान इनमें क्या फर्क है?

दादाश्री : अहंकार अर्थात् क्या? जो खुद नहीं है, उसका आरोपण करना। जो खुद है उसे जानता नहीं और जो नहीं है उसका आरोपण करना, वह अहंकार है। अहंकार अर्थात् चीज़ के आधार पर नहीं। उसकी मान्यता में क्या बरतता है? 'जो नहीं है ऐसा।' 'मैं' 'चंदूभाई' नहीं हूँ लेकिन मानता है कि 'मैं चंदूभाई हूँ' यही अहंकार! जब सिर्फ अहंकार हो, ममता रहित हो, तो वह अहंकार कहलाता है। अहंकार के विस्तृत स्वरूप को मान कहते हैं।

मान क्या है? वह, यह नहीं देखता कि उसके पास 'डिग्री' या 'क्वॉलिटी' नहीं है, और गुणों की तो बात ही कहाँ गई लेकिन 'इगो विथ रिच मटीरियल्स', वह मान है।

यहाँ पर 'फर्स्ट क्लास' कपड़े पहनकर, चश्मा सोने की फ्रेम वाला है और तीन हज़ार की घड़ी पहनकर, यों ज़रा बाँहें ऊपर रखता है ताकि लोगों को दिखाई दे। फिर कोई पूछे, 'कैसे हो सेठ?' तो यह मान दिखता है हमें, खुल्लमखुल्ला। क्योंकि उसने सामान तो अच्छा-अच्छा... श्रृंगार किया है। उसे मान कहते हैं। अर्थात् ये सब उसके लक्षण हैं!

प्रश्नकर्ता : फिर मान में से ही अभिमान जन्म लेता होगा न?

दादाश्री : नहीं। अभिमान कब जन्म लेता है? ममता हो, तब अभिमान जन्म लेता है।

फिर जब अहंकार ममता सहित हो, तब अभिमान खड़ा होता है। कोई भी ममता, चाहे

किसी भी प्रकार की! यानी किसी भी प्रकार की ममता सहित है तो वह अभिमान हुआ।

'यह मेरी मोटर है', ऐसा कहे तो इसे दिखाने के पीछे क्या होता है? अभिमान। उसके बच्चे ज़रा गोरे हों तो हमें दिखाता है, 'देखो, मेरे चारों बच्चे दिखाता हूँ।' वह है ममता और अभिमान! यानी जहाँ अभिमान होता है, वहाँ हमें ऐसा सब दिखाता रहता है।

अहंकार अलग दशा है और अभिमान अलग दशा है। जबकि मान का अर्थ है अहंकार का विस्तृत स्वरूप, जो बहुवचन हो चुका है।

फर्क, अहंकारी और मानी के बीच

प्रश्नकर्ता : अहंकारी और मानी के बीच क्या फर्क है?

दादाश्री : यदि कोई मज़दूर जा रहा हो, तो हम कहें, 'अरे! तेरा नाम क्या है?' तब वह कहता है, 'ललवा।' अब वह अपने आपको लल्लू भाई नहीं कहता, तो हम समझ जाते हैं कि यह सिर्फ अहंकारी ही है।

और हम किसी से पूछे कि, 'क्या नाम?' तब वह कहता है कि, 'लल्लू भाई।' तब हम समझ जाते हैं कि साथ ही यह मानी भी है।

और दूसरा कोई जा रहा हो और हम पूछे, 'कौन हो आप?' तब वह कहता है, 'मैं लल्लू भाई वकील, नहीं पहचाना मुझे?' यानी अभिमानी भी कहा जाएगा।

'मैं चंदूभाई हूँ', वह अहंकार और, 'यह मेरी वाइफ है', ऐसा कहना, वह अभिमान। 'मैं'पन बताना, वह अहंकार और 'मेरापन' बताना वह अभिमान है।

अहंकारी को अपमान का भय नहीं लगता। मानी को अपमान का भय रहता है। जो मानी होता है, उसे अपमान का भय लगा रहता है। मान हो तो अपमान लगेगा न! जहाँ मान ही नहीं हो, वहाँ पर?

प्रश्नकर्ता : लेकिन जब अहंकार का खंडन होता है, तब उसे अपमान महसूस होगा न?

दादाश्री : नहीं। इसे तो अहंकार भग्न करना कहते हैं लेकिन यदि वह मानी होगा तभी अपमान लगेगा।

खानदान का मान

ज़्यादा अहंकारी कौन होता है, कि जिसने मान न देखा हो और फिर मान मिल जाए, वह बहुत अहंकारी होता है। जिसने मान देखा हो और उसे मान मिले तो उसे अहंकार नहीं होता, वह खानदानी होता है। और जिसने मान देखा ही नहीं उसे कहो, साहब, तो साहब अकड़ जाता है भीतर। कुर्सी में बैठा-बैठा अकड़ जाता है। फिर उसे डाँटने वाला चाहिए, डाँटने वाला! वह भी उतार देता है थोड़ा तो...

प्रश्नकर्ता : तो आ जाता है ठिकाने पर।

अपमान का भय, वह है डबल मान

दादाश्री : डबल मान वह है अपमान। मान, तो सिंगल मान है और यह दो बार मान, वह अपमान है। अपमान में चार शब्द हैं और मान में दो शब्द हैं।

मानी हमेशा इसी प्रयत्न में रहता है कि कैसे मान मिले और कैसे अपमान न हो। दिनभर इसी जतन में रहता है। यदि कोई कहे, 'इतने रुपये चले गए।' 'वे गए तो गए लेकिन अपमान तो नहीं हुआ न!' तो कहता है, 'नहीं।' इसे अहंकार का जतन करना कहते हैं। उसी में रमणता, उसे पर-रमणता कहते हैं, पौद्गलिक रमणता।

जो मानी होता है न, वह दिन भर मान की ही योजनाएँ बनाता रहता है! जब भी जगाओ तब मान की ही योजनाएँ, अपना अपमान कैसे न हो, कैसे अपमान न हो, उसी भय में, उसी में ही ध्यान रहता है। वह बेकार ही सिरदर्द लेकर घूमता रहता है!

देखो, मान बाज़ार में मानी का उपयोग

मानी दो प्रकार के हैं : एक, जिसका पालन पोषण मान की भूख में हुआ और दूसरा, मान का आदी। जिसका पालन पोषण मान की भूख में हुआ, वह कभी भी इस ज्ञान को प्राप्त नहीं कर पाता। लेकिन जिसका पालन पोषण मान में ही हुआ, वह इस ज्ञान को प्राप्त करता है। अपने यहाँ जो सभी आएँ हैं, वे मान बाज़ार वाले ही आए हैं। मान बाज़ार वालों के लिए मोक्ष खुला है। लोभ बाज़ार वालों के लिए मोक्ष का दरवाज़ा नहीं खुला है।

मानी यदि विवाह में गया हो और मेज़बान जल्दबाज़ी में हाथ जोड़कर नमस्ते करना भूल गया तो उसका दिल बैठ जाता है। और इसे यह कर दूँगा, वह कर दूँगा, ऐसा करता है। उससे अंदर भयंकर अशुभ उपयोग हो जाता है।

विवाह में दो बाज़ार इकट्ठे होते हैं। एक, मोह बाज़ार और दूसरा, मान बाज़ार। मोह बाज़ार में स्त्रियाँ रहती हैं और मान बाज़ार में पुरुष। मान बाज़ार में पुरुष रहते हैं, उसमें प्रवेश करते ही बाहर मान बाज़ार को इन्वाइट करने वाले खड़े रहते हैं, 'आइए, आइए, आइए', तब 'ईश्वर भाई समझते हैं कि मानो मलीदा (मिठाई) मिल गया! मेज़बान तो इसलिए बुलाता है कि उसका समारोह अच्छा दिखाई दे। आप मन में ऐसा मान लेते हो, 'ओहोहो!' अब मेज़बान तो उसका समारोह अच्छा दिखाई दे, इसलिए करता है न! व्यवहार में तो ऐसा करना पड़ता है। वह कोई आपका रूप देखकर या आपकी चमक देखकर नहीं करता। अब ईश्वर भाई के साथ चीमन भाई आएँ हों तो मेज़बान चीमन भाई को नमस्कार करते हैं। उस समय चीमन भाई नहीं देख पाए और जब चीमन भाई ने नमस्कार किया हो तब मेज़बान ने नहीं देखा हो। तब फिर चीमन भाई मन में अकुलाते रहते हैं कि मेज़बान ने मुझे नमस्कार नहीं किए। इसे कहते हैं मान बाज़ार।

इस मान बाज़ार में फिर ऐसा है कि बीच में नवीन भाई को बैठाएँ तो नवीन भाई बैठ जाते हैं कि यह जगह ठीक है। तब लक्ष्मीचंद आते हैं। मेज़बान तो पकड़कर लाते हैं एक-एक को। लाकर वे फिर नवीन भाई से कहते हैं कि हटिए। तो भाई, यदि हटाना ही था तो मुझे यहाँ बैठाना नहीं था। बल्कि इससे मेरी धोती घिस गई और मेरी नाक कट गई, इसके बजाय नहीं बैठाया होता तो! इससे तो दूसरी जगह अच्छी थी। हमारे यहाँ एक वकील थे। वे बहुत अच्छे इंसान थे। उन वकील को इस तरह बीच में बैठाया था और मुझे भी बुलाया था। लेकिन उन दिनों ज्ञान प्रकट नहीं हुआ था। तब तो इसलिए बुलाते थे कि अंबालाल भाई अच्छे इंसान हैं और बड़े कॉन्ट्रैक्टर हैं। क्या इसलिए बुलाते थे कि हम लंबा कोट पहनते थे? मैं तो पहले से ही समझ गया था इसलिए मैं इस मान बाज़ार में कभी नहीं बैठता था। मान बाज़ार में, मुझे जहाँ अच्छा लगता वहाँ बैठता था।

फिर उन वकील को बीच में बैठाया। फिर मगन भाई, शंकर भाई आए, तो उन्हें हटना पड़ा। मैं वकील का स्वभाव जानता था कि इन्हें अकुलाहट हो सकती है। तो मैं उनके चेहरे को देखता रहा कि उनका चेहरा अकुलाया हुआ था। फिर जब झवेर लक्ष्मीचंद आए, तब वापस उन्हें हटना पड़ा। यों आठ बार जगह बदलनी पड़ी। तो जब यह

नाटक खत्म हुआ और तब कुछ पीने का आया तो उन्होंने उसे छूआ तक नहीं। उनका तो चेहरा ही बिगड़ गया था न! उन्हें पसंद नहीं आया कि, 'यहाँ कहाँ आ गया! यह तो फँस गया!' इसलिए कुछ नहीं पिया बाहर कितना अच्छा बैंड बज रहा था, उसे नहीं सुना। भीतर ही अकुलाते रहे। जब तक बैठे रहे तब तक मैं उनके चेहरे को देखता रहा कि वकील अकुला रहे हैं। वकील अच्छे इंसान थे लेकिन हर इंसान को अकुलाहट तो होती है न, क्योंकि कषाय भरे हुए हैं!

बाहर निकलते समय जब मैं उन वकील से मिला तब ज़रा मजाक के लिए, यह देखने के लिए कि इस मान बाज़ार का क्या फायदा है, उनसे पूछा, 'कैसे हो साहब?' कहने लगे, 'इन लोगों को कीमत नहीं है'। मैंने कहा, 'इन लोगों को मूल कीमत समझ में नहीं आती, मुझे आपकी कीमत समझ में आती है। आपको बैठाया था तो फिर उठाना नहीं चाहिए था।' इस तरह से मैंने उनसे बात निकलवायी। वे तो बेहद दु:खी हो रहे थे। अपने आपको न जाने क्या मान बैठे थे कि मेरे जैसा तो कोई है ही नहीं और मेरी माँ जैसी कोई माँ नहीं होगी। ऐसा मन में मान बैठते हैं लोग। वहाँ परलोक में जाएगा न, तो कोई बाप भी नहीं पूछेगा। यहाँ मनुष्यपन फिर से मिलेगा, उसकी भी गारन्टी नहीं है इस काल में।

विनाशकारी मान

मान ऐसा नहीं होना चाहिए कि भविष्य में उसके फल आए तो वे अपमान वाले हो। उसके फल भी मान वाले आने चाहिए।

मैं आपको इसका एक स्थूल उदाहरण देता हूँ। तुझे सब्जी लेने भेजा हो, अब तेरे पास पाँच रुपये हैं और रास्ते में पुराने दोस्त मिल जाएँ और उन्होंने चाय नहीं पी हो और वे चंदू से कहें, 'आज तो चाय का कुछ करो आप। चलो जरा चाय-वाय पीने।' तो वे चंदूभाई, चंदूभाई करते हैं और तब भाई, उस मान में आप दो-ढाई रुपये की उन्हें चाय पिला दी और घर से उन्होंने चार रुपये की सब्जी मंगवाई थी उसका क्या होगा? घर आकर क्या जवाब दोगे? बल्कि इस मान के लिए तो अपमान को, सभी को बुला लिया। और घर जाओगे तो निरा अपमान होगा। 'वे डाँटेंगे, वे डाँटेंगे, वे डाँटेंगे', आपके भीतर जो भय घुस जाएगा, वह तो अलग। यह स्थूल बात समझ में आई न? अब, सूक्ष्म बात कर।

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : अभी तक इसी तरह मान खाया है, इस स्थूल (मान की बात) की तरह। मान तो कैसा होना चाहिए? दादा को जो मान मिलता है, उसके फल अपमान वाले नहीं मिलते। बड़े-बड़े मान वाले फल मिलते हैं। क्योंकि असली नोट के ही छुट्टे लेने चाहिए। कैसे?

प्रश्नकर्ता : हाँ, असली नोट के ही छुट्टे लेने चाहिए।

दादाश्री : हाँ! और मान लो कि नकली नोट के छुट्टे करवा कर रुपये खर्च कर दिए लेकिन फिर उस नोट का हिसाब तो बाकी रहा न! यदि वह सुबह आकर शोर मचाए कि 'लाओ भाई! मेरे पैसे वापस लाओ।' अब, आपने तो रात को रुपये खर्च कर दिए, ज़रा सा मान मिला इसलिए। उससे सभी को सिनेमा दिखा दिया। और वह माँगे, तो फिर अपमान महसूस होगा भाई। इसे पागलपन कहेंगे, मेडनेस कहेंगे। ऐसा सभी जगह होता है। इसी मेडनेस से तो पूरा जगत् मेड बन गया है। हमें ऐसा मान चाहिए ही नहीं, इस मान को विनाशकारी मान कहेंगे। कैसा? अंत में फिर विनाश करेगा। विनाश करेगा या नहीं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, करेगा ही न!

दादाश्री : हाँ! वह तो तू सब्जी लेने निकला हो और रास्ते में उन मित्रों के लिए रुपये खर्च कर दिए तो फिर यह विनाशकारी मान हुआ न?

प्रश्नकर्ता : विनाशकारी ही होगा।

दादाश्री : इसलिए हमें असली नोट के ही छुट्टे लेने चाहिए। तब तक, मान खाए बगैर रहना चाहिए।

अपमान द्वारा तरछोड़ से हो जाता है मान का नियाणां

मान तो कैसा है कि कुछ हद तक अपमान होता है, तब ढीठ बन जाते हैं और कुछ मात्रा में मान मिलता ही रहे तो उसे पुष्टि मिलती रहती है।

प्रश्नकर्ता : दादा वह तो पहले से ही चलता आया होगा न?

दादाश्री : अनादिकाल से यही का यही सारा मान और अपमान! मनुष्य योनि में आया तभी से मान और अपमान, नहीं तो दूसरी वंशावलियों में, दूसरी योनियों में ऐसा कुछ भी नहीं है। यहाँ मनुष्यों में और वहाँ देवी-देवताओं में भी मान-अपमान का बहुत ऊधम है।

प्रश्नकर्ता : दूसरी योनि में जाने के बाद यह मान-अपमान भूल जाते होंगे?

दादाश्री : भूल जाते हैं। जब यहाँ से जाता है, तभी से भूल जाता है सबकुछ। याद नहीं रहता। आपने चार दिन पहले क्या खाया था, वह आपको याद है?

प्रश्नकर्ता : नहीं। लेकिन बैर, मान-अपमान, ये सब जीव को याद रहता है तो यह सब क्यों भूल जाता है?

दादाश्री : नहीं, वह भी याद नहीं रहता। सिर्फ ये क्रोध-मान-माया-लोभ ही याद रहते हैं और वे चार संज्ञाएँ तो हमेशा रहती ही हैं। बाकी, बैर-कड़वाहट तो बाद में होती है। वह याद नहीं आता। अपमान होते ही शोर-शराबा मचा देता है।

अब, अगर मान बहुत मिले तो मान की भूख मिट जाती है। 'आउट ऑफ प्रपॉर्शन' (अतिशय) मान मिलता ही रहे, तो फिर मान की भूख मिट जाती है। फिर उसे मान अच्छा नहीं लगता। हमें क्या कम मान देते होंगे लोग? ऐसा मान आपको मिले तो भूख ही मिट जाए फिर।

अब बचपन में हर एक बात में जिसे मान मिला हो, उसे बड़ी उम्र में मान की भूख नहीं रहती। बचपन में मान की भूख मिट गई हो तो उसे मान की नहीं पड़ी होती। अपमान की *तरछोड़* (तिरस्कार सहित दुतकारना) लगे तो इंसान खत्म हो जाता है। बचपन में दो-पाँच-दस बार जिसका अपमान हो जाए, मान नहीं मिले और मान को *तरछोड़* लगे, वह मन में निश्चित करता है कि मुझे चाहे जिस तरह से इन लोगों के पास से मान लेना है। तब उसका ध्येय बदल गया और वह मान की तरफ़ चला जाता है।

तब वह मान का ही *नियाणां* (अपना सारा पुण्य लगाकर किसी एक चीज़ की कामना करना) करता है। वह बड़ा होकर बहुत मानी बनता है, ज़बरदस्त मानी बनता है। बचपन से ही उसने तय किया होता है कि मुझे इन सब से 'आगे' जाना है। यानी फिर वह हेन्डल मारकर कहता है, 'इन सब से आगे आ जाऊँ, तभी सही है', और वह आगे आता भी है! हाँ, तन-तोड़ मेहनत वैगरह सबकुछ करता है, लेकिन आगे पहुँचता है।

मान हिंसक भाव ही है

मान, वह तिरस्कार है, दूसरों का तिरस्कार करने का भाव है। वह सभी रौद्रध्यान है। क्रोध-मान-माया-लोभ, वह रौद्रध्यान है।

ऐसा है, क्रोध-मान-माया-लोभ वगैरह सब हिंसक भाव ही हैं। ये क्रोध-मान-माया-लोभ सब हिंसा ही माने जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा है न, कषाय में हिंसक भाव होते हैं, तो मान में कैसा हिंसक भाव होता है? वह समझाइए।

दादाश्री : मान खुद ही हिंसक भाव है। मानी इंसान दूसरों की हिंसा करता है। वह तो उसके सामने यदि कोई ज़रूरतमंद हो, कोई स्वार्थी हो, मतलबी हो, तो वह चला लेता है लेकिन औरों को तो मानी इंसान कैसा लगता है? अब मान में क्रोध भरा हुआ है ही। तिरस्कार रहता ही है। 'मैं कुछ हूँ' ऐसा समझ कर तिरस्कार करता है लोगों का। मान का मतलब ही है तिरस्कार और अभिमानी तो बहुत तिरस्कार करता है।

भगवान ने कहा कि क्रोध और मान के कारण लोगों को दु:ख होता है। मान के कारण तिरस्कार होता है। मान तिरस्कार प्रकट करता है। क्रोध जलता है और जलाता है। उसका उपाय लोग भगवान के वाक्य सुनकर करने गए। क्रोध नहीं करना चाहिए, मान नहीं करना चाहिए, इसलिए त्रियोग साधना करने लगे। त्रियोग साधना से क्रोध-मान कुछ कम हुए और बुद्धि का प्रकाश बढ़ गया। बुद्धि का प्रकाश बढ़ने से लोभ का रक्षण करने के लिए कपट बढ़ाया। क्रोध और मान भोले होते हैं इसलिए कभी कोई यह बताने वाला मिल भी जाता है, जबकि लोभ और कपट तो ऐसे हैं कि खुद मालिक तक को भी पता नहीं चलता। वे तो आने के बाद निकलने का नाम तक नहीं लेते।

ये क्रोध-मान-माया-लोभ जो हैं न, उसमें लोभ की प्रकृति ऐसी है कि उसके मालिक को भी पता नहीं चलता कि मुझ में कितना लोभ है! यानी लोभ उतना अधिक कपट वाला है। क्रोध का स्वभाव भोला है। मालिक को तो क्या लेकिन पराये व्यक्ति भी कह जाते हैं कि इतना अधिक क्रोध क्यों कर रहे हो? लेकिन लोभ का तो खुद को पता ही नहीं चलता। लोभ से इंसान बहुत उल्टा चलता है न! और लोभ की प्रकृति चली जाए, ऐसी नहीं है। अनंत जन्मों तक लोभ की प्रकृति नहीं जाती। क्योंकि लोभ की राग प्रकृति है, वह द्वेष प्रकृति नहीं है। और राग प्रकृति ठंडक वाली होती है इसलिए वह प्रकृति छूटने नहीं देती, वह तो बहुत भारी प्रकृति है। लोभ और कपट, वे दोनों राग प्रकृति में जाते हैं और क्रोध व मान, वे द्वेष प्रकृति में जाते हैं। द्वेष प्रकृति तो अपनी पकड़ में आ जाती है लेकिन राग प्रकृति तो पकड़ में नहीं आती। मालिक की पकड़ में भी नहीं आती न! क्योंकि उसमें तो इतनी अधिक मिठास बरतती है! लोगों को तो मान और अपमान की ही पड़ी हुई है न!

मान का रक्षण करता है क्रोध रूपी गुरखा

क्रोध-मान-माया-लोभ दो प्रकार के हैं : एक, मोड़े जा सकें ऐसे-निवार्य। दूसरे, मोड़े नहीं जा सकें ऐसे-अनिवार्य।

मोक्षमार्ग से कौन भटकाता है? क्रोध-मान-माया-लोभ। लोभ का रक्षण करने के लिए कपट है इसलिए कपड़ा बेचते समय एक उँगली जितना कपड़ा बचा लेता है। मान के रक्षण के लिए क्रोध है। इन चारों के आधार पर लोग जी रहे हैं।

ये क्रोध-मान-माया-लोभ की कमज़ोरियाँ हैं, तो मुसीबतों का सामना कैसे हो सकेगा?

जो क्रोध-मान-माया-लोभ हैं, इनमें से क्रोध और माया, ये तो मान और लोभ के रक्षक हैं। वास्तव में लोभ का रक्षक माया है और मान का रक्षक क्रोध है। फिर भी मान के लिए माया का थोड़ा-बहुत उपयोग होता है। कपट करके भी मान प्राप्त कर लेते हैं।

क्रोध यों ही नहीं बैठा रहता। वह तो, जब तक मान नाम का शत्रु बैठा रहे, तभी तक क्रोध बैठा रह सकता है। क्रोध तो मान का रक्षण करने के लिए है। अत: जब तक मान है तब तक गुरखा (चौकीदार) रहेगा ही।

प्रश्नकर्ता : क्रोध किसलिए करता है?

दादाश्री : क्रोध तो, खुद के मान में रुकावट आए तब क्रोध करता है। खुद के मान को ठेस लगे, तब क्रोध से मान का रक्षण करता है। मान का रक्षक है क्रोध।

'मान ने' (क्रोध नामक) गुरखा रखा है कि यदि कोई अपमान करने आए तो उससे कहता है कि, 'तेल निकाल देना।' और दूसरा है लोभ। उसने भी एक गुरखा रखा है। उसने कपट को रखा है। उसी को माया कहा गया है। अगर लोभ चला जाए तो माया भी चली जाएगी।

मानी को झिड़कें तो वह हँसता नहीं है, तुरंत ही उसका क्रोध भड़क जाता है। पर लोभी को क्रोध नहीं आता।

मानी तो बाहर जाए तब से मान में ही रहता है। रास्ते में भी जहाँ जाए वहाँ मान में और लौटे तब भी मान में ही। पर यदि कोई अपमान करे तो वहाँ वह क्रोध करता है।

मान की गांठ के लक्षण

चार प्रकार की गांठें हैं, क्रोध, मान, माया और लोभ। अब जिसमें मान की गांठ हो, वह तो सुबह से ही तय करता है कि, 'ऐसा क्या करूँ ताकि आज मुझे मान मिले, मान कहाँ से मिलेगा'? दिन भर यही हिसाब लगाता है। और जब मान मिले ऐसा हो, उस दिन आसपास के पहचान वालों को साथ ले जाने की कोशिश करता है, कि आना मेरे घर की बाड़ी में, उसमें चाय भी पिलाता है! अपना मान दिखाने के लिए। लोग उसका मान देखे इसलिए ऐसा करता है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : मान हुआ, वह किस तरह पता चलेगा?

दादाश्री : हम ऐसे 'नमस्कार' करें तो तुरंत उनके चेहरे पर से पता चल जाता है। शरीर-वरीर टाइट हुआ कि तुरंत पता चल जाता है। और उसने 'नमस्कार' नहीं किया तब भी उस पर असर होता है। डिप्रेशन आ जाता है, उससे मान का तुरंत पता चल जाता है। हमें ऐसा सब नहीं होता है। उस मान की गांठ वाले को हम पहचान जाते हैं। यह मान की गांठ है।

प्रश्नकर्ता : मान की गांठ के परिणाम कैसे आते हैं?

दादाश्री : मान की गांठ हो तो जब वह गांठ फूटती है तब आपको भय, भय और भय, ऐसा सब दिखाती है। वह जो लौकिक ज्ञान है, वह भय वगैरह सब दिखाता है। वे जो सारी गांठें फूटती हैं, उनमें से दिनभर में कौन सी अधिक फूटती है, वही गांठ बड़ी है।

जिसके बहुत विचार आते हैं, वह ग्रंथि बड़ी, आलू जितनी बड़ी होती है।

जिसकी मान की गांठ बड़ी होती है उसे

ऐसा रहा करता है, 'कहीं अपमान हो गया तो? कहीं अपमान हो गया तो'। या 'कहाँ से मान मिलेगा? कहाँ से मान मिलेगा?' उसी में तन्मयाकार रहता है!

तिरस्कार व दुःख हो, वैसा मान नहीं चाहिए

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, मान के परमाणु बहुत ही हों तो वे नुकसानदायक कहलाते हैं न?

दादाश्री : कौन से?

प्रश्नकर्ता : ऐसा मान हो कि चलो भाई, इसका भला करें, इसका अच्छा करें।

दादाश्री : नहीं, कोई चीज़ नुकसानदायक नहीं है। नुकसानदायक तो दूसरों का तिरस्कार करने वाला मान, वह व्यक्ति के लिए नुकसानदायक है।

मान किसे कहेंगे? कि जो एक्सेस मान है, लोगों का तिरस्कार करता है, बाकी, 'यह मैं अच्छा करता हूँ', उसमें कोई हर्ज है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : मैं ऐसे बहुत एनालिसिस (पृथक्करण) करता हूँ तब ऐसा लगता है कि अंदर में एक ऐसी इच्छा रहती है, कि यह मान, रुतबा और वह भी किस प्रकार का, किसी का लाभ लेने के लिए नहीं, किसी का भला करने के लिए।

दादाश्री : यह जो (आपका) मान है न, वह मान आपको इस जगह पर खींच लाया है। वर्ना यदि यह मान नहीं भरा होता तो आप दूसरी जगह होते।

प्रश्नकर्ता : क्योंकि सीमंधर स्वामी का मंदिर बनता है न, तो मुझे ऐसा लगता है कि मैं तो इसमें स्पर्धा में उतरूँ।

दादाश्री : उसके जैसी तो बात ही नहीं होती न, इस दुनिया में। वह तो बहुत ही अच्छी चीज़ है।

बाकी, मान किसे कहते हैं? मैं आपसे कुछ कहता हूँ, लेकिन उससे दूसरे को दुःख हो जाए, फिर अपना बर्ताव भी ऐसा हो, उसे मान कहते हैं।

मान अच्छा लगे तो...

प्रश्नकर्ता : कोई मान दे और अच्छा लगे तो, उसे मान की भीख कहते हैं?

दादाश्री : नहीं। अच्छा लगता है, वह तो स्वाभाविक रूप से अच्छा लगता ही है। आपको चीनी वाली चाय पसंद है या बिना चीनी की? चीनी वाली चाय स्वाभाविक रूप से अच्छी ही लगती है, लेकिन यदि कोई कहे कि, 'भाई, मुझे तो बगैर चीनी की ही चाय अच्छी लगती है, बोलो!' तब मैं कहूँगा कि यह अहंकार है। इसके बजाय चीनी वाली चाय पी न, चुपचाप। स्वादिष्ट तो रहेगी! सही है या गलत?

प्रश्नकर्ता : अब, यदि मान अच्छा लगे, तो वह कैसा कहलाएगा?

दादाश्री : वह पसंद है तो उसमें हर्ज नहीं है। पसंद तो आएगा न! लेकिन भले ही मान अच्छा लगे, कोई हर्ज नहीं। कोई कहे कि, 'उस मान का मुझसे *निकाल* (निपटारा) नहीं हो सकता', तो मैं कहूँगा कि, 'अब यदि इस जन्म में *निकाल* नहीं हो पाए, तो अगले जन्म में *निकाल* करेंगे।' अभी मान खा ले, चैन से!

'मान' देने वाले पर राग नहीं

अर्थात् मान की इच्छा नहीं होनी चाहिए। मान दिया जाए और आपकी थाली में आए तो

खाओ चैन से। धीरे से, शांति से खाओ, रौब से खाओ लेकिन उसकी इच्छा नहीं होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह मान भुनाए, तो उसमें उसे कोई परेशानी नहीं आएगी?

दादाश्री : मान भुनाने में हर्ज क्या है? मान को भुना सकते हैं, तब तो वह खर्च हो गया। अब फिर से खड़ा नहीं होता है न? मान तो चखो। मैं कहता हूँ न कि चखो। फिर क्या वहाँ आगे जाकर चखना है? क्या वहाँ सिद्ध गति में मान मिलने वाला है? यहाँ मिलता है उतना चखो चैन से। लेकिन आदत मत डाल देना, 'हेबिच्युएटेड' मत हो जाना।

प्रश्नकर्ता : वह मान नीचे नहीं गिरा देगा?

दादाश्री : वह तो, अभिमान नीचे ले जाता है। यानी लोग मान दें तो चखने में हर्ज नहीं है लेकिन साथ-साथ ऐसा भी रहना चाहिए कि 'यह नहीं होना चाहिए।' और मान दे तो उसे लेने की अपने यहाँ छूट दी है। मान की छूट है, लेकिन मान देने वाले पर राग नहीं होना चाहिए।

मान के 'स्वाद' से लोभ छूटता है

प्रश्नकर्ता : दादा, अभी तक अपमान के भय के कारण जो संकुचितता थी या मान की हानि होगी, उससे डिप्रेशन रहता था, जिसके कारण मैं किसी प्रक्रिया में भाग ही नहीं लेता था, दूर हट जाता था तो यह मान मिला तो उससे मुक्तता आती गई।

दादाश्री : नहीं, यह लोभग्रंथि है इसलिए उसे मान मिलने से जो स्वाद आया तो लोभ की ग्रंथि टूटने लगी। उससे लोभग्रंथि टूटती है। मान का स्वाद चखने को मिला, उससे लोभ की ग्रंथि टूट जाती है, एकदम से!

अब जो मान की गांठ होती है न, वह मान उसे भटकाता रहता है। जहाँ मान मिल रहा हो, वहाँ उसे कोई कहे कि 'आपके नाम की एक तख़्ती लगवा देंगे।' तो कहेगा, 'पचास हज़ार लिख लो।' मान मिलने पर लोभ छोड़ देता है। जबकि लोभी तो लाख मान मिले तब भी लोभ नहीं छोड़ता।

लोभ भी मान के हेतु वाला

तुझ में कौन-कौन सी ग्रंथियाँ हैं, लोभ की और दूसरी?

प्रश्नकर्ता : मान।

दादाश्री : लोभ कितना है तुझे?

मान हो, मान को संभाले रखना हो, तो लोभ कम कर देना पड़ेगा। और लोभ को संभाले रखना हो तो मान कम कर देना पड़ेगा। तू तो दोनों करना चाहता है। कैसे मेल बैठेगा?

प्रश्नकर्ता : एक भी नहीं चाहिए।

दादाश्री : यह क्या है, वह मैं समझ गया हूँ। इसका लोभ भी ज़बरदस्त है और मान भी ज़बरदस्त है। मान ठीक है लेकिन इसका जो लोभ है न, उसका आखिरकार मान के हेतु के लिए उपयोग होता है। हेतु मान का है। इसलिए सिर्फ एक मान पर ही जाता है सब। लोभ किसलिए कि जो भी पैसे हों न, उनमें से यदि खुद को मान मिल रहा हो न, तो उसमें खर्च कर देता है अर्थात् मान का लोभ है।

लोभी को मान-तान की कुछ पड़ी नहीं होती। कोई अपमान करे और सौ रुपये दे जाए तो कहेगा कि, 'हमें तो सौ रुपयों के फायदे से मतलब है न, भले ही अपमान करे!' एक बार अपमान कर गया लेकिन हमारे घर में तो सौ

रुपये आए नफे में! वह लोभ के कारण! और मान के कारण हो न, तो चाहे उसके पाँच सौ रुपये खर्च हो जाएँ लेकिन मान मिले तो बहुत हो गया।

तो मान और लोभ को लेकर यह जगत् खड़ा है कि जहाँ मान नहीं, वहाँ लोभ है, जहाँ लोभ नहीं, वहाँ मान है। दीये जैसा स्पष्ट है न?

मान का लोभ और लोभ का मान

प्रश्नकर्ता : आपने कहा कि लोभ और मान साथ में नहीं हो सकते और यदि विरोधाभासी हैं, तो साथ में किस तरह रहते हैं?

दादाश्री : हाँ, यह तो मान के हेतु से लोभ है इसलिए साथ में रहते हैं। मान के लिए मान हो और लोभ के लिए लोभ हो न, मान के लिए लोभ न हो तो ये दोनों साथ-साथ नहीं रह सकते। सारा लोभ, जितने भी पैसे हो न, उतना उसे मान मिलता हो न, तो उसका साथ देगा। यानी मूल रूप से इसके पीछे लोभ नहीं है। लोभ के पीछे मान रहा हुआ है। यानी बहुत भारी अहंकार है यह। वह यही समझता है कि, 'मेरे जैसा अक्लमंद कोई नहीं है!'

प्रश्नकर्ता : इसका अर्थ यही हुआ न, कि मान का लोभ कहा जाएगा।

दादाश्री : हाँ, मान का लोभ। मान प्राप्त करने का लोभ लेकिन अंततः मान में आता है। लोभ के लिए नहीं, मान के लिए लोभ!

प्रश्नकर्ता : क्या लोभ के लिए मान हो सकता है?

दादाश्री : हाँ, होता है न!

प्रश्नकर्ता : वह किस तरह से?

दादाश्री : इतना कमाऊँगा तभी मेरा *निकाल* होगा, यह एक प्रकार का मान है। लेकिन वह अहंकार कहलाता है, मान नहीं कहलाता।

मानी व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक मानी ही रहेगा। मानी को अपने मान का ही लोभ रहता है। यदि मान का लोभ न हो तो कहा जाएगा कि उसका इगोइज़म उतना कम है। उतना उसे साफ दिखाई देगा। लेकिन यदि मान का ही लोभ हो गया तो फिर अंधा ही हो गया।

अंत में लोगों को किसी चीज़ का लोभ न हो तो मान का लोभ होता है। लोगों को लोभ के मान से अधिक मान का लोभ होता है क्योंकि लोभ का मान नहीं होता। यानी मान का लोभ ज़्यादा होता है! अंत में लोभ तो होता ही है और लोभ से संयोग खड़े होते हैं। संयोग खड़े होते हैं इसलिए संसार खड़ा हो जाता है!

मान का लोभ करवाता है निंदा

प्रश्नकर्ता : मान का लोभ होता है?

दादाश्री : मान का लोभ नहीं माना जाता, सुख का लोभ कहा जाता है। मान के लोभ में तो फिर निंदा घुस जाती है।

प्रश्नकर्ता : तो इस मुंबई में लोग मान के लोभ में नहीं हैं?

दादाश्री : नहीं, वास्तव में यह मान का लोभ नहीं माना जाता, सुख का लोभ होता है। मान का लोभ कब कहलाता है कि दूसरों की निंदा करने का उसे समय मिले। मुंबई शहर में लोगों से पूछकर आओ कि 'आपको दूसरों की निंदा करने का समय है?' तब कहेंगे, 'नहीं।' यानी घड़ी भर का भी खाली समय इन लोगों के पास नहीं होता। और वहाँ वढवाण (गुजरात का एक गाँव) में जाएँ तो?

प्रश्नकर्ता : वहाँ सभी जगह यही होता है।

दादाश्री : फिर भी हमने क्या कहा है कि, इस हिन्दुस्तान में निंदा और तिरस्कार कम होने लगे हैं और लोभ बढ़ा है। सुख का लोभ लगा है, इसलिए हिन्दुस्तान का अच्छा होने वाला है। इस लक्षण पर से मैं समझ जाता हूँ। भले ही ज़रा मोह बढ़ेगा, लेकिन दूसरा सब निंदा, तिरस्कार वगैरह कम होंगे न?

प्रश्नकर्ता : यानी जिसे मान की पड़ी होती है, क्या उसे लालच की नहीं पड़ी होती?

दादाश्री : जिसे मान की पड़ी होती है, उसमें बहुत अवगुण नहीं घुसते। अपमान के भय से ही नहीं घुसते।

मान की भीख के लक्षण

प्रश्नकर्ता : ऐसा पता चलता है कि अभी भी मान चाहिए।

दादाश्री : मान चाहिए उसमें हर्ज नहीं है लेकिन मान के लिए उपयोग रहा करता है कि मान कैसे मिले, ऐसा?

प्रश्नकर्ता : नहीं, ऐसा उपयोग नहीं रहता।

दादाश्री : फिर यदि मान नहीं मिले तो?

प्रश्नकर्ता : तो कोई परेशानी नहीं।

दादाश्री : तब फिर कोई परेशानी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मान का लालच घुस जाए तो?

दादाश्री : हाँ, वह भी लालच होता है। वही लालच! उसे मान की भीख कहते हैं हम।

मान की कामना हो तो उसी को भीख कहते हैं। किसी भी चीज़ की कामना, वह भीख कहलाती है। कामना, भीख वगैरह *निकाली* नहीं माने जाते। कामना, भीख लगभग एक ही अर्थ वाले शब्द हैं। लेकिन यदि उस तरफ उपयोग नहीं जाए तो कुछ स्पर्श ही नहीं करेगा। यानी इसमें मार्ग नहीं रुंधता, लेकिन भीख वाला तो 'दूसरे मार्ग पर चल पड़ा' ऐसा कहा जाएगा।

हमने तो क्या कहा है? अपमान पसंद नहीं है तो उसमें हर्ज नहीं है लेकिन मान की भीख नहीं रखनी है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अपमान का भय, वह कमज़ोरी तो निकालनी ही है न?

दादाश्री : वह तो जैसे-जैसे अपमान खाते जाएँगे, वैसे-वैसे अपमान की कमज़ोरी कम होती जाएगी। जितना दिया है, वह वापस आता जाएगा। मान की भीख हो तो परेशानी है।

प्रश्नकर्ता : 'अपना अपमान न हो जाए', यदि वैसा *लक्ष* (जागृति, ध्यान) में रहे तो, वह क्या कहलाएगा?

दादाश्री : मानी को मान का उपयोग रहा करता है। अपमान नहीं होने देने के लिए ही वहाँ पर उपयोग रहा करे, संभालता रहे, वह भीख कहलाती है।

घुसी मान की भीख, उससे चूक गया ध्येय

कैसे पता चलेगा कि मान की भीख है? कई साधु भी कहते हैं कि हमें मान की भीख नहीं है। अच्छा! अभी अपमान करेंगे तो पता चलेगा कि वह मान की भीख थी या किसकी थी? अपमान से चिढ़ जाए तो समझ लेना कि मान चाहिए! और हम अपमान से नहीं चिढ़ते यानी मान नहीं चाहिए। ऐसा विश्वास हुआ न?

प्रश्नकर्ता : हुआ।

दादाश्री : मतलब कि हमें मान की भीख नहीं है। कीर्ति की भीख नहीं है, किसलिए कीर्ति? कीर्ति देह की होती है। क्या आत्मा की कीर्ति होती होगी? जिसकी अपकीर्ति होती है न, उसकी कीर्ति होती है। आत्मा की तो कीर्ति भी नहीं और अपकीर्ति भी नहीं।

ये सभी भीख जाती नहीं। मान की भीख, कीर्ति की भीख, विषय की भीख, लक्ष्मी की भीख... भीख, भीख और भीख! बिना भीख वाले देखे हैं क्या? आखिर में मंदिर बनवाने की भी भीख होती है, इसलिए मंदिर बनवाने में पड़ते हैं। क्योंकि कोई काम नहीं मिले, तब कीर्ति के लिए यह सब करते हैं।

हिन्दुस्तान का मनुष्यधर्म सिर्फ मंदिर बनवाने के लिए नहीं है। सिर्फ मोक्ष में जाने के लिए ही हिन्दुस्तान में जन्म है। एक अवतारी हुआ जाए, उस तरफ का ध्येय रखकर काम करना, तो पचास अवतार में, सौ अवतार में या पाँच सौ अवतार में भी हल आ जाएगा। दूसरा ध्येय छोड़ दो। फिर शादी करना, बच्चों का बाप बनना, डॉक्टर बनना, बंगले बनवाना, उसमें हर्ज नहीं है। परंतु ध्येय एक जगह पर ही रख, कि हिन्दुस्तान में जन्म हुआ है तो मुक्ति के लिए साधन कर लेना है। इस एक ध्येय पर आ जाओ तो हल आएगा! बाकी, किसी प्रकार की भीख नहीं होनी चाहिए।

जहाँ भीख है, वहाँ भगवान होते ही नहीं। यह तो विषय की भीख, लक्ष्मी की भीख, मान की भीख होती है। मान यानी, 'मुझे मान देंगे और इन लोगों से इस प्रकार से (मान) मिलेगा', ऐसी इच्छा रखना, वह तो भीख ही है।

जो विशेष मान दें, वे हमारे दुश्मन

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में एक-दूसरों को मान देना, वह कुछ बुरा तो नहीं कहा जाएगा न?

दादाश्री : मान देना चाहिए, लेकिन दृष्टि नीची रखकर। दृष्टि बिगड़ते ही तुरंत पता चल जाता है। मान में तो तुरंत दृष्टि बिगड़ती है इतना ही जोखिम है, अन्य कोई जोखिम नहीं है। यदि आप मानी हो और आपको कोई स्त्री मान दे तो आपकी दृष्टि खिंच जाएगी। कोई लोभी हो और उसे लोभ दे तो भी दृष्टि खिंच जाती है। फिर पूरा जीवन मटियामेट कर देता है!

कुछ लोगों को कैसा होता है कि मान की गांठ विषय के लिए ही रक्षा करती है। अत: उसका विषय खत्म होते ही मान की गांठ छूट जाएगी। कुछ लोगों में पहले मान की गांठ होती है, और बाद में विषय होता है, यानी मान की गांठ के आधार पर विषय होता है और कुछ लोगों को विषय के आधार पर मान की गांठ होती है! अत: एक का आधार निराधार हुआ कि दूसरा गायब हो जाता है।

आपको कोई नमस्कार करे और दो मीठे शब्द बोले तो तुरंत उस पर आपकी दृष्टि मिठास वाली हो जाएगी और फिर उसकी दृष्टि आपके लिए बिगड़ेगी। अत: कोई मान देना शुरू करे, तभी से उसे दुश्मन मान लेना। व्यवहार में साधारण मान दे तब तो कोई हर्ज नहीं है, लेकिन यदि दूसरे प्रकार का मान दे, तभी से हमें समझ जाना चाहिए कि ये अपने दुश्मन हैं, हमें गड्ढे में ले जाएँगे!

सब से बड़ा जोखिम ही यही है, दूसरा कोई जोखिम है ही नहीं।

मान में विकृति

प्रश्नकर्ता : मान सहज रूप से मिले तो चखने में आपत्ति नहीं है लेकिन वह फिर विकृत होने लगे और उसकी इच्छा होती है। ऐसा होता है न, फिर?

दादाश्री : ऐसा सब होता है, लेकिन वैसी इच्छा तो होनी ही नहीं चाहिए और इच्छा हो तो नुकसानदायक है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर मान में वह विकृति कौन-कौन सी और किस हद तक की हो सकती है?

दादाश्री : बहुत तरह-तरह की विकृतियाँ होती हैं। मान में विकृतियाँ तो बहुत सी हैं और वह मान में विकृति ही इंसान को पीछे धकेल देती है। यानी मान चखने में हर्ज नहीं है। कोई आपसे कहे 'आइए, पधारिए साहब, ऐसा है, वैसा है।' आप वह मान आराम से चखो-करो, लेकिन उसका आपको कैफ नहीं चढ़ जाना चाहिए। हाँ, चखो आराम से! और अंदर संतोष होगा लेकिन यदि कैफ चढ़ा तो वह हो जाएगा कुरूप! बाकी, जब तक मान है तब तक इंसान कुरूप दिखता है और कुरूप बना इसलिए किसी को आकर्षण नहीं होता। कुरूप दिखता है या नहीं दिखता? चेहरे पर रूप होता है, फिर भी कुरूप दिखता है।

जहाँ मान में कपट वहाँ जागृति नहीं आती

प्रश्नकर्ता : इस मान को चखे, तो फिर वह जागृति को 'डाउन' नहीं करता, दादा?

दादाश्री : जागृति कम ही हो जाती है न! अब जहाँ मान में कपट हो वहाँ पर जागृति उत्पन्न नहीं होती। जहाँ मान में कपट हो वहाँ मान दिखाई ही नहीं देता।

प्रश्नकर्ता : मान में कपट वह क्या है, वह कुछ समझ में नहीं आता? उसमें क्या कहना चाहते हैं?

दादाश्री : मान में कपट यानी, कोई व्यक्ति दादा की सेवा करता है तो लोग उसे मान देते हैं, वह फिर दूसरे दो लोगों को तैयार करता है और वे दो लोग उसके बारे में बताते हैं। यानी कि खुद लिए पक्की टोली बनाता है। वह व्यक्ति ज़्यादा मान खाने के लिए इस प्रकार के उपाय करता है।

प्रश्नकर्ता : तो क्या ऐसा है कि एक व्यक्ति दादा की सेवा करता है और वह खुद ही दूसरे दो लोगों को तैयार करता है?

दादाश्री : दूसरों को सिखाता है कि भाई, सभी से इस तरह से कहना।

प्रश्नकर्ता : कि ऐसी सेवा करो।

दादाश्री : ज़्यादा मान खाने के लिए इस प्रकार के उपाय करता है, ऐसी चालाकी करता है।

प्रश्नकर्ता : ओहो! इसलिए वह फिर से बताता है, उसका प्रचार करता है।

दादाश्री : हाँ...

प्रश्नकर्ता : खुद का प्रचार करता है।

दादाश्री : खुद का प्रचार, ज़्यादा मान खाने के लिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दूसरों से कह कर।

दादाश्री : हाँ! दूसरों से कह कर, दूसरों से ऐसा करवाता है। आप नहीं समझे?

प्रश्नकर्ता : ठीक है दादा, समझ गया। संक्षेप में, मान खाने के लिए किसी भी प्रकार का कपट करता है वह।

दादाश्री : और फिर वह मान दिखाता है हमें कि देखो, हमारा कितना मान है! लेकिन जहाँ

अपमान हो सकता है, वह नहीं दिखाता। उसे कपट ही कहा जाएगा न!

प्रश्नकर्ता : अपमान होने की जगह नहीं दिखाता।

दादाश्री : कोई दिखाता है क्या? इन जैसे हों तो शायद दिखाएँगे कभी। वे भी नहीं दिखाते? आप भी नहीं दिखाओगे? नहीं?

प्रश्नकर्ता : दिखा देता हूँ, तुरंत ही दिखा देता हूँ।

दादाश्री : ऐसा? ऐसे तो बहुत कपट किए होंगे मान के लिए।

प्रश्नकर्ता : ओहो! तो इससे, उसकी जागृति में किस प्रकार की बाधा आती है? क्या जागृति उत्पन्न ही नहीं होती?

दादाश्री : जहाँ कपट आ जाए वहाँ जागृति बंद। जितना कपट है न, उतनी जागृति कम है उसकी।

मान का पता ही नहीं चलता उसे, यदि उसमें कपट हो तो! जिसमें कपट रहता है न, वहाँ तो लोभ का भी पता नहीं चलता।

प्रश्नकर्ता : दादा, अगर यह पता चल जाए, मान लो कि यह मान भीतर में कपट करता है, कपट हो रहा हो और भीतर में पता भी चलता जाए तो उसे क्या कहेंगे?

दादाश्री : तो उसका उपाय हो सकता है। वह कपट नहीं करता हो और मैं कपट करता हूँ, ऐसा (खुद को) पता चल जाए तभी से तुम धीरे-धीरे जो कपट नहीं करता उस जैसे बन जाओगे। 'कपट करता हूँ', उसका पता चल गया। पता चल गया अत: उसे निकालने के लिए तैयार हो जाओगे। लेकिन जिसे पता ही नहीं चलता, उसे? लोग बेभानपने में ही घूम रहे हैं।

दादा की बोधकला से हल आता है मान का

मान किससे टिका हुआ है? खुद सामने वाले को हल्का मानता है इसलिए मान टिका हुआ है। इसलिए उसे हल्का मत मानना और 'यह तो मेरा *ऊपरी* (बॉस, वरिष्ठ मालिक) है', ऐसा कहना तो मान चला जाएगा।

प्रश्नकर्ता : सामने वाले को हल्का मानने से मान टिका है?

दादाश्री : हाँ! 'मैं तो इसका चाचा हूँ', ऐसा मानोगे तो वह मान रहेगा। आपको तो व्यवहार में ऐसा कहना चाहिए कि 'भाई, मैं इसका चाचा हूँ।' लेकिन भीतर में आपको ऐसा मानना चाहिए कि, 'वह मेरा चाचा है।' तो प्लस-माइनस हो जाएगा। प्लस-माइनस हो जाने पर ऐल्जब्रा (बीजगणित) में खत्म हो जाता है न, पूरा ही खत्म हो जाता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : फिर $X = Y$ आ गया। समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : यह बात पसंद आई, दादा। बहुत अच्छी है। आपने कहा न, कि सामने वाले को हल्का मानने से मान टिका है?

दादाश्री : हाँ ! इसीलिए मान टिका है न! यह मेरा भतीजा है, मैं इसका दादा हूँ, फिर भाई, मोटा होता जाता है। और भागाकार नहीं करता। फिर कहता है, मैं इसका दादा हूँ। यह मेरा कहना नहीं मानता। कैसे मानेगा भाई, तू दादा बन गया है तो! यदि तू उसका भागाकार कर देगा तो वह मान जाएगा।

दादा देते हैं 'मान', सही तरीके से

यहाँ पर, यह बड़ा है और यह छोटा है,

ये बुज़ुर्ग हैं इस प्रकार के विशेष भाव नहीं हैं। हाँ, व्यवहार में हम पक्के रहते हैं फिर भी। कुछ ऐसे लोग आएँ, यदि यहाँ पर प्रधानमंत्री आएँ तो हम खड़े होकर स्वागत करेंगे और यहाँ साथ में बिठाएँगे। फिर यदि वे कहें कि, 'मैं तो धर्म के लिए आया हूँ', तब मैं कहूँगा कि, 'यहाँ नीचे बैठिए।' लेकिन प्रधानमंत्री के तौर पर आएँ तो उनके साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे। क्योंकि उन्हें दुःख नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : उनके अहंकार को भी दुःख नहीं पहुँचना चाहिए।

दादाश्री : अपना धर्म ऐसा होना चाहिए कि अहंकारी व्यक्ति को भी दुःख नहीं हो। यानी कि व्यवहार के अनुरूप उन्हें मान देना चाहिए। हम व्यवहार में बहुत ध्यान रखते हैं। हर एक को उसकी योग्यता के अनुसार, हर एक को उसकी अपनी जगह पर, सही तरीके से!

कषायों के कम होने का क्रम

प्रश्नकर्ता : दादा, लोभ की गांठ का पता नहीं चलता, इसलिए टिकी हुई है।

दादाश्री : यदि उसका पता चल जाए तो इंसान का कल्याण ही हो जाएगा न! बनिए में लोभ की गांठ होती है और क्षत्रियों में मान की गांठ होती है। दोनों ही गांठें नुकसानदायक हैं।

प्रश्नकर्ता : क्रोध-मान-माया-लोभ, हम इस तरह सीक्वेन्स (अनुक्रम) में क्यों बोलते हैं?

दादाश्री : उनके जाने का जो रास्ता है उसमें, पहले क्रोध कम होता जाता है, फिर मान कम होता जाता है, फिर कपट कम होता जाता है, फिर लोभ तो सब से अंत में जाता है।

प्रश्नकर्ता : ये जो क्रोध-मान-माया-लोभ हैं, उनमें से पहले क्रोध जाता है, फिर मान जाता है, फिर माया जाती है और फिर लोभ जाता है। लोभ सब से अंत में जाता है। ऐसा स्टेपिंग क्यों है? लोभ अंत में क्यों?

दादाश्री : ऐसा है न, पहले लोभ घुसा था। सब से पहले लोभ घुसा था और उसी अनुसार, जैसे घुसे थे वैसे ही निकलते हैं।

प्रश्नकर्ता : वह कैसे घुस गया?

दादाश्री : जाँच करना न अब! वह तुझे देखना है। कोई भी चीज़ जो तू देखता है, उसे लेने का मन होता है न? लेने का भाव हुआ, वही लोभ है। और फिर किसी को दिखाने का भाव हो कि, 'मैं यह लेकर आया हूँ', वह मान है! फिर यदि कोई लेने लगे तो क्रोध करता है। पहले लोभ होता है।

प्रश्नकर्ता : और माया?

दादाश्री : माल लेते समय वह एक के बजाय दूसरा बदल लेता है। दूसरा अच्छा हो और यदि उसका मालिक ज़रा सा दूसरी तरफ देखने लगे न, तो बदल लेता है ऐसे कपट करता है, वही माया है। लोभ होने पर कपट होता है। कुछ भी लेने का भाव हुआ, वह लोभ। फिर वहाँ छलकपट होता है। जिसे कोई भी इच्छा नहीं, उसे दुनिया में कुछ भी बाधक नहीं है। एक मिनट भी इच्छा नहीं, खाए-पीए, फिर भी!

मान की ग्रंथि टूटती है अपमान से

मानी का लोग अपमान करते हैं। मान यानी भोला। इसलिए उसे सभी पहचान जाते हैं और 'क्या सोचकर सीना तानकर चल रहे हो', ऐसा कहेंगे। मानी के लिए तो रास्ते पर चलने वाले भी कह देते हैं कि 'ओहोहो भाई, किसलिए इतने टाइट हो?'

प्रश्नकर्ता : लोभी को मान देकर लोभ की ग्रंथि तोड़नी चाहिए, लेकिन इस मान की ग्रंथि को कैसे तोड़ सकते हैं?

दादाश्री : मान की ग्रंथि तो ये लोग अपने आप ही तोड़ देंगे। वह अपमान से टूटती है न! वर्ना मान का तो हर कोई प्रदर्शन करता रहता है। मान भोला है, इसलिए छोटे बच्चे भी समझ जाते हैं कि, 'इनमें मान' है।

और फिर होता क्या है? बहुत लोभी हो न, तो वह अपमान सहन करके भी यदि सौ रुपये मिल रहे हों तो हँसता है और मन में ऐसा समझ लेता है कि, 'जाने दो न, हमें तो मिल रहा है न', वह लोभ की गांठ है। जबकि मानी तो बेचारा कोई मान दे तो उसके पास जो भी हो वह खर्च कर देता है। उसे अपमान का बहुत भय रहता है। कोई मेरा अपमान करेगा तो? अपमान करेगा तो? उसे उसका बहुत भय रहता है।

मानी तो, यदि आप जाओ न, तो आपको देखकर कहेगा, 'आइए, पधारिए।' क्योंकि खुद को जैसा चाहिए वैसा ही सामने वाले को देता है।

अब मान की ग्रंथि तो टूट जाएगी क्योंकि तन-मन अर्पण कर देने हैं इसलिए मान की ग्रंथि टूट जाएगी।

कब होगा मान का छेदन?

अपमान करने वाला जब उपकारी माना जाएगा, तब आपके मान का छेदन होगा! अपमान करने वाले को उपकारी मानना चाहिए, उसके बजाय जब अपमान होता है तब इंसान दुःखी हो जाता है।

अपमान तो चखने जैसा है। घर बैठे आए तब चखते नहीं है, वर्ना शक्तियाँ कितनी बढ़ जाएगी! लेकिन जब अपमान आता है तब लेता नहीं और छोड़ देता है। फिर शक्ति कैसे बढ़ेगी?

'मूर्ख हो, बेअक्ल हो' किसी ने अगर ऐसा कह दिया तब हमें कहना चाहिए, 'भाई, मैं आज से नहीं, पहले से ऐसा ही हूँ।' ऐसा कहना।

प्रश्नकर्ता : तो ऐसा है कि अपमान सहन करना सीख जाना चाहिए?

दादाश्री : जब मान चला जाएगा, तब अपमान सहन करने की शक्ति आ जाएगी।

कुछ लोग ऐसा कहते हैं न कि 'मेरी कीमत नहीं की?' तेरी कीमत थी ही क्या? तू इस समुद्र से पूछकर आ कि तेरी कीमत कितनी है? एक लहर आएगी और तुझे खींच ले जाएगी! कितनी ही लहरों का मालिक, तेरे जैसे कितने ही लोगों को वह खींच ले गया! कीमत तो उनकी है जिन्हें राग-द्वेष नहीं होते!

प्रश्नकर्ता : अब तो ये मान-अपमान बहुत चुभते हैं, इनसे मुक्त कैसे हो सकते हैं?

दादाश्री : अपमान चुभता है या मान चुभता है?

प्रश्नकर्ता : यों तो अपमान।

दादाश्री : अरे! मान भी बहुत चुभता है। यदि मान भी ज़रा ज़्यादा दे न तो इंसान खड़ा हो जाता है। मान बहुत दे न, तो वहाँ से ऊबकर भाग जाता है इंसान। यदि हररोज़ पूरे दिन मान देते रहें न, तो इंसान ऊबकर वहाँ से भाग जाता है। अपमान तो घड़ी भर भी अच्छा नहीं लगता। मान तो कुछ समय तक अच्छा भी लगता है। इसके बावजूद इंसान अपमान सहन कर सकता है, मान सहन नहीं कर सकता। हाँ, मान सहन करना तो सीसा पीने के बराबर है। बेटे की शादी हो

और, वह नीचे झुककर पिता के पैर छूए तब पिता खड़ा हो जाता है, उठ जाता है। 'अरे! तू क्यों हिल रहा है?' तब वह कहता है, 'सहन नहीं होता।'

प्रश्नकर्ता : इसके बावजूद भी अपमान अच्छा न लगे तो उसे क्या कहा जाएगा?

दादाश्री : अपमान अच्छा न लगे, वह तो बहुत ही गलत कहा जाएगा। अपमान तो अच्छा नहीं लगता और वह तो, हम सभी को अपमान अच्छा नहीं लगता। वह अच्छा लगे ऐसी शक्ति लोगों में उत्पन्न नहीं हुई है। उन्हें तो अपमान करने वाला किराये पर रखना चाहिए लेकिन कोई किराये पर रखता ही नहीं है न! लेकिन किराये वाला सचमुच का अपमान नहीं करेगा न! और लोग तो, जब कोई सचमुच में अपमान करे, तब दु:खी हो जाते हैं। जो सचमुच में अपमान करे, उसे उपकारी मानना लेकिन तब इंसान दु:खी हो जाता है। जब कोई सचमुच में अपमान करे तब दु:खी नहीं हो जाना चाहिए। अत: जब कोई अपमान करने वाला मिल जाए न, तो बहुत उपकारी मानकर 'यह साथ ही रहे तो बहुत अच्छा' ऐसा तय करना।

रोज़ अपमान मिलने से विलय हो जाती है 'मान' की गांठ

अपमान कब तक आहत करता है? जब तक मान के लिए भिखारीपन (मान के भिखारी) है। नाशवंत चीज़ों के लिए भिखारीपन है वहाँ तक।

अपमान को पचाना, वह तो महान बल है। कोई गाली दे, अपमान करे फिर भी मान नहीं जागना चाहिए। कोई थप्पड़ मारे फिर भी मान क्यों जागे? हमें तो जानना चाहिए कि सात मारी या तीन? ज़ोर से मारी या धीरे से? ऐसे जानना है। खुद के स्वभाव में आना तो पड़ेगा न?! आपको तो सुबह में तय करना है, कि आज पाँच अपमान मिलें तो अच्छा और फिर पूरे दिन में एक भी नहीं मिला तो अफसोस रखना, तब मान की गांठ विलय होगी। जब अपमान हो, उस समय जाग्रत हो जाना।

हमारे देह की संरचना ऐसी होती है न, कि चाहे कितना भी घी खाए तो भी पच जाता है? इसी तरह हमारे मन की संरचना भी ऐसी हो जानी चाहिए कि चाहे कितने भी अपमान खाएँ तो वे भी पच जाएँ।

ऐसी संरचना कब होगी? तब, जब अपमान मिलने पर हम समझें कि ओहोहो! जो दवाई मिल ही नहीं रही थी, वह आज मिली है!

अपमान 'विटामिन' है और मान 'फूड' है। जो मान और अपमान को समझ गया न, तो हो जाएगा शुद्ध!

मान मिलने के बाद अपमान भी उतना ही मिलेगा, इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में आएगा। ज़रा सा भी *पुद्गल* का सुख आपने चखा, तो आपको उतना लौटाना पड़ेगा। इसलिए वीतराग हो जाओ!

अपमान पचाने से विकसित होती हैं उत्कृष्ट शक्तियाँ

प्रश्नकर्ता : दादा, यह जो मान की छूपी भीख है, वह कैसे जाएगी? उसके सामने किस तरह से एडजस्टमेन्ट लेना है? उसमें उपयोग किस तरह रखना है?

दादाश्री : वह तो, जब आप अपमान की आदत डाल दोगे, तब।

प्रश्नकर्ता : प्राप्त करनी है अयाचक दशा जबकि अंदर तो हर एक बात की भीख पड़ी हुई है।

दादाश्री : अयाचकपन को तो जाने दो न, लेकिन यदि भीख चली जाए तब भी बहुत हो गया। यह भीख तो, अब यदि आप किसी के कम्पाउन्ड में से होकर जा रहे हों और वह व्यक्ति ऐसा हो कि गालियाँ दे तो रोज़ वहाँ से होकर जाना चाहिए, रोज़ गालियाँ खानी चाहिए लेकिन उपयोगपूर्वक सहन करना चाहिए। वर्ना, खुद को आदत पड़ जाएगी और ढीठ हो जाएगा!

प्रश्नकर्ता : उपयोगपूर्वक सहन करना अर्थात् क्या?

दादाश्री : अगर कोई आपकी बहन को उठाकर ले जाए, तो उस उठाने वाले पर क्या आपको प्रेम आएगा? क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : द्वेष होगा।

दादाश्री : तो वह नींद में होता है या उपयोगपूर्वक? हंड्रेड परसेन्ट उपयोगपूर्वक होता है, एकदम उपयोगपूर्वक।

फिर जब चोरी करने जाता है, तब वहाँ उपयोगपूर्वक जागृति रखता है या सोता है?

प्रश्नकर्ता : उपयोगपूर्वक रहता है।

दादाश्री : अत: उपयोग को समझ जाओ। यहाँ पर तो उपयोग वाले ही काम आते हैं। कोई अपमान करे तब ऐसा पता चले कि मुंह बिगड़ गया है, तो हमें फायदा या नुकसान नहीं होता। नो लॉस, नो प्रॉफिट और यदि बाहर मुंह बिगड़ जाए तो नुकसान हो जाता है। नुकसान किसे होता है? *पुद्गल* को, आत्मा को नहीं और यदि बाहर मुंह नहीं बिगड़े, क्लियर रहे तो इसका मतलब आत्मा का आनंद रहा। आत्मा का फायदा होगा न!

प्रश्नकर्ता : यदि मुंह बिगड़ जाए तो *पुद्गल* को क्या नुकसान होता है?

दादाश्री : *पुद्गल* को तो नुकसान हो ही गया न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन यदि वह जागृतिपूर्वक रहे तो उनका मुंह नहीं बिगड़ेगा।

दादाश्री : कितनों को तो, अपमान होने पर आज यदि उनका मुंह बिगड़ जाए, तो उसे खुद को पता चल जाता है। बाद में जब मैं पूछता हूँ कि, 'तुझे खुद को पता चला?' तब कहता है, 'हाँ! पता चला।' लेकिन ठीक कैसे करे? उसके बावजूद भी उसे ठीक कर देना है। अंत में सहज ही करना है। वैसा सहज तो, जब बहुत समय से सत्संग सुनता हुआ आए, तब सहज होता जाता है।

प्रश्नकर्ता : कोई गालियाँ दे तो वापस उसके कम्पाउन्ड में से होकर जाना चाहिए लेकिन क्यों जाना चाहिए?

दादाश्री : यदि आप पैसे देकर किसी को रखोगे तो वह गालियाँ नहीं देगा। और पैसे देकर लाया हुआ आदमी गालियाँ देगा तो असर नहीं होगा। उससे कुछ नहीं होगा। वह तो यदि कोई कुदरती रूप से गालियाँ दे न, तो उत्तम शक्ति आएगी न! अत: यदि उस तरह की शक्ति की कमी रहती हो तो आपको प्राप्त करने की ज़रूरत है।

जब मान मिले तब उपयोग

प्रश्नकर्ता : अभी आपने अपमान के सामने उपयोग रखना बताया, वह हमें समझ में आया लेकिन मान के सामने जो उपयोग रखना चाहिए उस पर थोड़ा प्रकाश डालिए।

दादाश्री : मान दें, तब तो उपयोगपूर्वक अर्थात् क्या कि 'ये किसे मान दे रहा है', वह समझना चाहिए। 'मुझे नहीं, ये तो मेरे पड़ोसी को मान दे रहा है, *पुद्गल* को दे रहा है।

प्रश्नकर्ता : जब कोई मान देता है तब

मीठा लगता है न हमें! वह मिठाई की तरह मार देता है हमें!

दादाश्री : '*पुद्गल* का है', ऐसा कहा तो आप पर असर नहीं होगा न! लेना-देना नहीं है न आपको। मान-अपमान तो वह *पुद्गल* को दे रहा है, आपको नहीं। उसे कहते हैं जागृतिपूर्वक, उपयोगपूर्वक। चंदूभाई को मान दे तो उससे आपको क्या लेना-देना? कोई मान या अपमान करे तो (चंदूभाई पर) डाल देना, तो वह हितकारी होगा वर्ना हितकारी नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : अब, हमें मान दे रहे हैं, उसकी जगह पर अगर हम ऐसा रखें कि ये दादाजी को मान दे रहे हैं, आत्मा को मान दे रहे हैं, तो?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं। वे चंदूभाई को दे रहे हैं ऐसा जानना चाहिए। दादा को लेना-देना ही क्या है? दादा को मान की ज़रूरत ही नहीं है न! आत्मा को मान की ज़रूरत ही नहीं है। यह सब टेली होना (तालमेल बैठना) चाहिए। उससे सहमत होना चाहिए, उसे कहते हैं तालमेल। तालमेल सहमति से ही होता है। हमें पता भी चलता है कि यह भूल हो रही है।

जगत् को जो अच्छा लगता है, वही आपको देगा। आपको उसकी आदत नहीं हो जानी चाहिए। मान दे तब भी नहीं, अपमान करे तब भी नहीं। अपमान करने के लिए यदि किसी व्यक्ति को रखोगे तो क्या उसमें मज़ा आएगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं, उसमें मज़ा नहीं आएगा।

दादाश्री : यदि नाटक में गालियाँ दे तो क्या उसका असर होगा? 'तू नालायक है, तू ऐसा है, तू चोर है, बदमाश है' कोई ऐसा कहे तो असर होगा? नहीं होगा। क्योंकि आयोजन किया हुआ है।

अपमान पचाना आसान, मान पचाना कठिन

जीने के लिए क्या मान की ज़रूरत है? यह तो मान को ढूँढता है और मूर्छित होकर फिरता है। यह सब 'ज्ञानी पुरुष' के पास से समझ लेना चाहिए न?

एक दिन यदि नल में चीनी डाला हुआ पानी आए तो लोग ऊब जाएँ। अरे! ऊब गए? तो कहे, 'हाँ, हमें तो सादा पानी ही चाहिए।' ऐसा यदि हो न तो उसे सच्चे की कीमत समझ में आएगी। ये लोग तो फेन्टा और कोकाकोला खोजते हैं। अरे, तुझे किसकी ज़रूरत है वह जान ले न! शुद्ध हवा, शुद्ध पानी और रात को खिचड़ी मिल गई तो यह देह शोर मचाता है? नहीं मचाता। इसलिए ज़रूरतें क्या है, इतना निश्चित कर लो।

किसी ने दादाजी से पूछा कि, 'लोग आपको फूल चढ़ाते हैं, उन्हें आप क्यों स्वीकार करते हैं?' तब दादाजी ने कहा, 'ले तुझे भी चढ़ाते हैं! पर तुझसे सहन नहीं होगा।' लोग तो मालाओं का ढेर देखकर दंग हो जाएँगे! किसी के पैर छूने जाएँ तो वह तुरंत खड़ा हो जाएगा! जिसे अपमान सहन करना आया, वही मान सहन कर सकता है।

अपमान सहन करने से ज़्यादा कठिन है मान सहन करना। वह तो सिर्फ, ज्ञानी पुरुष ही सहन कर सकते हैं, वर्ना, अन्य किसी का सामर्थ्य नहीं। अपमान सहन हो सकता है लेकिन मान सहन करना बहुत कठिन है। अरे! यह दुनिया ऐसी है? पूरी दुनिया ऐसी ही है। और मान के बिना किसी को अच्छा नहीं लगता। अपमान अच्छा नहीं लगता। मान के बिना चैन नहीं पड़ता। और ज़्यादा मान दो तब सहन नहीं होता।

अपमान पचाना आसान है लेकिन मान पचाना कठिन है।

'कुछ भी नहीं चाहिए', ऐसा रहे तो कम होता है मान

लोग तो कहने आएँगे कि, 'आओ चाचा', आपके बगैर तो मुझे अच्छा ही नहीं लगता। 'जितना आप कहेंगे उतना सब काम कर दूँगा आपका। आपके पाँव दबा दूँगा।' अरे, यह तो मीठा-मीठा बोलकर खुश कर रहा है। वहाँ बहरे हो जाना।

जिसे मान खाने की आदत हो चुकी हो, वह ठगा जाता है।

हमें भी ठगने वाले आते हैं, मीठा-मीठा बोलने वाले आते हैं लेकिन मैं नहीं ठगा जाता! हमारे पास कितने ही लोग आते होंगे, वे मीठा-मीठा बोलते हैं, सब करते हैं लेकिन राम तेरी माया...! मीठा-मीठा बोलने से यहाँ किसी को कोई लाभ नहीं होता! वे समझ जाते हैं कि दादा के पास कोई बात नहीं बनेगी, इसलिए लौट जाते हैं!

लेकिन फिर वे उकता जाते हैं कि, 'इन दादा के पास कोई बात बने, ऐसा नहीं लगता। यह खिड़की भविष्य में खुलेगी नहीं।' अरे, मुझे कुछ नहीं चाहिए, क्यों आए हो खिड़की खोलने? जिसे चाहिए वहाँ जाओ न! चाहे कोई भी आए, वापस भेज देता हूँ कि, 'भाई, यहाँ नहीं'।

अत: अब सरल हो गया है, तो अब अपना काम पूरा कर लो। इतना सरल नहीं आएगा। ऐसा चान्स फिर नहीं आएगा। यह चान्स उच्च प्रकार का है न, तो यह सारी मिठास कम होने दो न! उस मिठास में मज़ा नहीं है। मीठा-मीठा बोलने वाले लोग तो मिलेंगे लेकिन उसमें आपका हित नहीं है। इसलिए अब इस एक जन्म में मीठे का शौक छोड़ दो! अब तो आधा ही जीवन बचा है न? अब पूरा जीवन कहाँ रहा है?

जिसे 'कुछ भी नहीं चाहिए', उसका सारा काम हो जाता है। चीज़ सामने से आ जाए, तब भी नहीं चाहिए। आपको तो चाहिए न? क्या-क्या चाहिए?

डिस्चार्ज मान के सामने ज्ञान जागृति

प्रश्नकर्ता : दादा, ज्ञान लेने के बाद अब मुझे ऐसा नहीं लगता कि पिछले एक-दो सालों में किसी पर राग-द्वेष हुआ हो। वास्तव में तो लगभग होता ही नहीं है लेकिन यह जो मान परिणाम खड़ा होता है न, वह यों इतनी आसानी से नहीं जाता।

दादाश्री : उसे जाने नहीं देना है, उसे देखना है, वह डिस्चार्ज है और अभी डिस्चार्ज में राग-द्वेष हैं, वह अज्ञान का परिणाम है। 'आपको' उसमें जो राग-द्वेष नहीं होते हैं, वह आत्मा प्राप्ति का परिणाम है। अब वह तो डिस्चार्ज है, वह निकलता रहेगा।

प्रश्नकर्ता : यों तो मान अच्छा लगता है।

दादाश्री : आपको कहना है, 'बहुत रौब मार रहे हो? अच्छे मज़े हैं आपको तो! कोई हर्ज नहीं लेकिन अब ज़रा वापस राह पर आ जाओ'। उसमें हर्ज नहीं है, वह डिस्चार्ज परिणाम है।

प्रश्नकर्ता : नहीं। लेकिन इससे रियलाइज़ेशन में थोड़ा ऑब्स्ट्रक्शन नहीं आएगा?

दादाश्री : नहीं! रियलाइज़ तो सब हो ही चुका है लेकिन इसे आचरण में आने में देर लगेगी। राग-द्वेष चले गए हैं, इसलिए ऐसा कहा जाएगा कि आत्मा प्राप्त हो गया। सौ प्रतिशत ऐसा कह सकते हैं कि आत्मा प्राप्त हो गया है। सौ प्रतिशत आत्मा रूप हो चुके हो आप। यह सारा जो कचरा माल भरा हुआ है, जैसे-जैसे वह निकलता जाएगा, वैसे-वैसे परिणाम आता जाएगा।

प्रश्नकर्ता : दादा जब मान खड़ा होता है तब हमें अच्छा तो नहीं लगता। लगता है कि यह गलत ही है। वहाँ पर हमें क्या जागृति रखनी चाहिए या फिर सिर्फ उसे देखते ही रहना है?

दादाश्री : वह जो मान खड़ा होता है उसे देखना है। वही ज्ञान कहलाता है। देखने वाला ज्ञान कहलाता है और जो खड़ा होता है, वह अज्ञान है। ज्ञान, अज्ञान को देखता है। फिर चाहे एक अंश मान हो या पचास अंश मान हो लेकिन जो अज्ञान को देखे, वह ज्ञानी। वह अज्ञान है, ऐसा आपको पता चलता है न?

प्रश्नकर्ता : यह मान वाला अज्ञान कहलाता है?

दादाश्री : वह मान वाला अज्ञान है, ऐसा आपको पता चलता है न? उस अज्ञान को देखते हो इसलिए आप ज्ञानी हो, वर्ना अज्ञानी को तो अज्ञान का पता नहीं चलता! उसमें कुछ गलत नहीं है।

प्रश्नकर्ता : जितनी आसानी से राग-द्वेष निकल गए हैं उतनी आसानी से यह मान नहीं निकल रहा है झट से!

दादाश्री : राग-द्वेष निकल नहीं गए हैं, आपने नहीं निकाले हैं वह तो आत्मा प्राप्त होने की निशानी है।

मोक्ष का हेतु पूर्ण करने के लिए है यह जन्म

हमें इस मनुष्यजन्म में क्या काम करना है? तब कहें कि मोक्ष हेतु के लिए पर्याप्त हो उतना, उतना ही काम पूरा करना है। मोक्ष के हेतु के लिए जो साधन मिल जाए, उस साधन की आराधना के लिए ही यह मनुष्य देह है।

आजकल तो, सांसारिक हित का भान है, ऐसा किसे कहेंगे? जिसमें नैतिकता की कक्षा हो, प्रामाणिकता की कक्षा हो, जिसका लोभ नॉर्मल हो, जिसमें कपट नहीं हो, मान भी नॉर्मल हो, उसे सांसारिक हित का भान कहेंगे। वर्ना जो एब्नॉर्मल लोग हैं, उन्हें कहीं हित का भान रहता होगा? जो लोभांध हो चुका हो, वह किसके साथ सिर टकराएगा, ऐसा कैसे कहा जा सकता है? जिसे सांसारिक हित का भान हो, वह मनुष्य कहलाता है। वर्ना इनका तो यदि फोटो खींचें तो लोग कहेंगे ज़रूर कि मनुष्य का फोटो है, लेकिन भीतर मनुष्य के गुण नहीं हैं।

मान नामक बेटा जीवित तो सभी जीवित

'माया माथे शींगड़ा, लंबे नव नव हाथ,
आगे मारे शींगड़ा ने पीछे मारे लात।'

माया (अज्ञानता) क्या कहती है? मेरा 'मान' नाम का लड़का जब तक जीवित है, तब तक मेरी सारी संतानों को मार दोगे, फिर भी वे सजीवन हो जाएँगे। क्रोध-मान-माया (कपट)-लोभ, राग-द्वेष, वे छह मेरे बेटे और सातवीं मैं, ऐसी हमारी वंशावली की बगिया हरी-भरी रहेगी। अतः इस माया और उसके छह बेटों ने सारे संसार को लड़ाई-झगड़ों में फँसा रखा है। यदि एटमबम गिराना है तो उस पर गिराओ न? झगड़े यही करवाते हैं और संसार खड़ा ही रहता है। उसके छह बेटों में क्रोध भोला है। तुरंत ही भड़भड़ कर देता है। उसकी तो कोई भी पहचान करा सकता है। कोई न कोई कह देगा, 'अरे! क्रोध क्यों करता है?' मान, वह भी अच्छा है। पर क्रोध से थोड़ा निम्न कक्षा का, कोई न कोई तो कहेगा, 'अब सीना ताने क्या घूम रहा है?' कपट और मोह तो किसी को भी दिखाई नहीं देते और मालिक को खुद भी खबर नहीं होती। और अंतिम नंबर आता है लोभ का। कपट, मोह और लोभ से तो भगवान

भी तंग आ जाते हैं। जल्दी मोक्ष में जाने नहीं देते। वह तो बहुत भारी वंशावली है, इस माया की तो! अंत तक यह माया जीती जा सके, ऐसा नहीं है। क्रमिक मार्ग में भगवान पद सामने से पुष्पमाला लेकर आए, तब यह माया! उसे मिलने नहीं देती। वह तो ज्ञानी पुरुष मिलें तभी हल निकलता है और माया की वंशावली निर्मूल होती है।

हम और कुछ नहीं करते। मान, अहंकार नाम का उसका जो सबसे बड़ा बेटा है, उसे ही जड़मूल से उखाड़ फेंकते हैं। निकाल देते हैं। फिर पाँचों बेटे और बुढ़िया माया, सभी मर जाते हैं ताकि छुटकारा हो और मुक्ति मिले। हम ज्ञान देते हैं, अत: आपको सभी माया से मुक्ति दिला देते हैं।

श्रीमद् राजचंद्र ने कहा है कि, 'यदि मान नहीं होता तो यहीं मोक्ष हो जाता।' और माया भी कहती है, जब तक मेरे छ: बेटों में मान नामक बेटा जीवित है तब तक बाकी सब को फिर से सजीवन होने में देर नहीं लगेगी। बाकी को जितना मारना हो उतना मारना, लेकिन मेरा मान नामक बेटा नहीं मरेगा। ज्ञानी पुरुष उस मान नामक बेटे को मार देते हैं, बाकी सभी को जीवित रहने देते हैं। जीते रहो यहाँ पर, कोई हर्ज नहीं।

जगत् में मान नहीं होता तो यहीं पर मोक्ष होता

प्रश्नकर्ता : श्रीमद् जी ने कहा है कि, 'इस जगत् में यदि मान नहीं होता, मान कषाय नहीं होता तो यहीं पर मोक्ष हो जाता!'

दादाश्री : हाँ। ये लोभ वगैरह की कोई झंझट नहीं है लेकिन यदि मान नहीं होता तो यहीं पर मोक्ष हो जाता! अज्ञानी लोगों को बताया है कि बाकी कुछ भी होगा न, तो देखा जाएगा लेकिन मान पर ही जागृति रखना। मान ही इस संसार का मुख्य कारण है।

मान और मोक्ष का आपस में बैर है। बैर किस-किसका है? मान और मोक्ष का। जिसका मान चला जाए, उसका यहीं मोक्ष हो गया।

प्रश्नकर्ता : दादा, वह कैसे, उसमें मान कषाय को ही महत्व दिया है, बाकी के कषाय को कन्सिडर नहीं किया?

दादाश्री : निरे मान से ही उत्पन्न हुआ है यह जगत्। मान से ही बाकी के कषाय उत्पन्न हुए। मान से ममता उत्पन्न हुई और ममता से लोभ उत्पन्न हुआ। इसलिए यदि यहाँ मान न हो, तो गाली दे तब भी उसे मुक्ति ही है न! और मान न हो, तो नुकसान हो जाए तब भी मुक्ति ही है न! यदि मान न हो तो मोक्ष ही हो जाए, लेकिन मान न हो ऐसा होगा कैसे? मान जाता नहीं न, करोड़ों उपाय करने पर भी मान नहीं जाता। ममता और अहंकार दोनों नहीं जाते। वह तो जब ज्ञानी पुरुष के पास बैठते हैं, ज्ञानी पुरुष की कृपा प्राप्त होती है तब मान जाता है।

जागृति से हो जाएगा मान निर्मूल

'ज्ञानी पुरुष' को मान या अपमान की कुछ भी नहीं पड़ी होती। मान के सुख, वे विषय सुख हैं। 'मेरा मानभंग होगा' जब तक ऐसा भय रहेगा तब तक कुछ भी ज्ञान प्राप्त ही नहीं हुआ, ऐसा कहा जाएगा। यह तो मूल वीतराग ज्ञान ही प्राप्त करना होता है, और कुछ भी नहीं चाहिए न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन सेवा करते हैं तो मेवा खाने का मन तो होता है न, दादा।

दादाश्री : ऐसा है न, भगवान कहते हैं कि ये जितने भी लोग सेवा करते हैं न, वे रिश्वत लिए बगैर नहीं करते। यदि रिश्वत लिए बगैर करें न, तो उन्हें मोक्ष का मार्ग मिल जाएगा।

इसलिए भगवान से ये लोग कहते हैं, 'नहीं,

नहीं, साहब, कभी भी पैसे नहीं लिए, मैंने इस घर का पानी भी नहीं पिया।' तब भगवान कहते हैं, 'लेकिन मान की रिश्वत लेते हो न?' 'यदि अपमान करे तो आप सेवा नहीं करोगे', ऐसा कहते हैं। क्या कहते हैं?

प्रश्नकर्ता : दादा, हम मान की रिश्वत भी नहीं लेते।

दादाश्री : मान की रिश्वत नहीं लेते? जब थोड़ा बहुत अपमान करे तो? जब होगा तब पता चलेगा।

अंदर पूरी तरह परखकर देख लेना कि भावना जगत् कल्याण की है या मान की? खुद के आत्मा को परखकर देखे तो सब पता चले, ऐसा है। शायद अंदर मान पड़ा होगा तो वह भी निकल जाएगा। क्योंकि किसी बड़े पद वाले व्यक्ति का बाहर सब अच्छा हो और घर में दु:खी हो और उसे सत्ता दी जाए तो वह एक-दो लाख खा जाएगा, लेकिन बाद में तृप्त हो जाएगा न? और अपना तो यह विज्ञान है। इसलिए अब जो मान है, वह *निकाली* माल है न! वह धीरे-धीरे खत्म हो जाएगा, फिर भी तब तक पूरी जागृति रखनी पड़ेगी।

किसी भी काल में यह विज्ञान प्राप्त नहीं होता और ज़रा से मान के लिए ज्ञान को खो देते हैं। अपनी बात तो ऐसी है कि ज़रा भी बाहर आए तो जगत् मान देगा लेकिन अपना खो जाएगा।

यहाँ (अंतिम दशा प्राप्ति) तक के सभी तरीके बता दिए गए हैं। जितनी आपके 'हार्ट की प्योरिटी', जितना आप प्योरिटी में रहकर बटन दबाओगे, उतना तैयार! यानी आपके बटन दबाने की देर है।

लोगों का कल्याण तो कब होगा? हम शुद्ध हो जाएँगे तब, बिल्कुल शुद्ध! प्योरिटी ही सभी को, पूरे संसार को आकर्षित करती है! प्योरिटी!!! प्योर वस्तु जगत् को आकर्षित करती है। इम्प्योर चीज़ संसार को फ्रेक्चर कर देती है। इसीलिए प्योरिटी लानी है!

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्यश्री दीपकभाई के सत्संग कार्यक्रम - लाइव वेबकास्ट द्वारा इन्टरनेट से

4 नवम्बर	रात 8-30 से 10-30	**दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति**
5 नवम्बर	सुबह 8 से 9-15	**नूतन वर्ष (वि. सं. 2078) पर विशेष कार्यक्रम**

परम पूज्य दादा भगवान का 114वाँ जन्मजयंती महोत्सव

17 नवम्बर	सुबह 10 से 12-30 **और** शाम 5-30 से 7-30 - **सत्संग**
18 नवम्बर	सुबह 8 से 9-30 पूजन-सामयिक-आरती
(जन्मजयंती दिवस)	सुबह 10 से 12-30 **और** शाम 5-30 से 7-30 - **दर्शन**
19-20 नवम्बर	सुबह 10 से 12-30 **और** शाम 5-30 से 7-30 - **सत्संग**
21 नवम्बर	सुबह 10 से 12-30 **सत्संग और** शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

[उपरोक्त कार्यक्रमों में समय-संजोग के अधीन परिवर्तन हो सकता है।]

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** (079) 27540408, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

पूज्य नीरू माँ/पूज्य दीपक भाई को देखिए टी.वी. चैनल पर

भारत

- **'दूरदर्शन गिरनार'** पर रोज सुबह 7-30 से 8-30, रात 9 से 10
- **'अरिहंत'** चैनल पर रोज सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3, रात 8 से 9
- **'वालम'** पर रोज शाम 6 से 6-30 **(सिर्फ गुजरात राज्य में)**
- **'स्वरश्री'** पर हर रोज शाम 6 से 6-30 **(सिर्फ गुजरात राज्य में)**
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज सुबह 7-30 से 8, रात 8-30 से 9-30 **(हिन्दी में)**
- **'साधना'** पर रोज सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 **(हिन्दी में)**
- **'उड़ीसा प्लस'** टी.वी. पर रोज सुबह 7-30 से 8 **(हिन्दी में-केवल उड़ीसा राज्य में)**
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर रोज सुबह 7 से 7-30 **(मराठी में)**
- **'आस्था कन्नड़ा'** पर रोज दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 **(कन्नड़ा में)**

USA - Canada

- **'TV Asia'** पर रोज सुबह 7-30 से 8 EST

U K

- **'वीनस' टी.वी.** पर रोज सुबह 8 से 8-30 GMT **(हिन्दी में)**
- **'वीनस' टी.वी.** पर रोज सुबह 8-30 से 9 GMT
- **'MA TV'** पर रोज शाम 5-30 से 6-30 GMT

Australia

- **'Rishtey'** पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 **(हिन्दी में)**

Fiji - NZ - Singapore - SA - UAE

- **'Rishtey'** पर हर रोज सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 **(हिन्दी में)**

USA - UK - Africa - Australia

- **'आस्था ग्लोबल'** पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30 IST
  (डिश टी.वी. चैनल **UK** -849, **USA**-719) **(गुजराती और हिन्दी में)**

अक्तूबर 2021
वर्ष-16 अंक-12
अखंड क्रमांक - 192

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

मोक्षमार्ग में मान कषाय अधिक बाधक है

मान किससे टिका हुआ है ? खुद सामने वाले को हल्का मानता है इसलिए मान टिका हुआ है। इसलिए उसे हल्का मत मानना और 'यह तो मेरा ऊपरी है', ऐसा कहना तो मान चला जाएगा। तभी तो कृपालुदेव ने लिखा हैं कि 'इस जगत् में मोक्ष क्यों नहीं हो पाता? तब कहते हैं कि, 'लोभ या अन्य कारण की कोई झंझट नहीं है लेकिन यदि मान नहीं होता तो यहीं पर मोक्ष हो जाता! मान पर ही जागृति रखना। मान ही इस संसार का मुख्य कारण है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.